# "साधना में सावधानी"

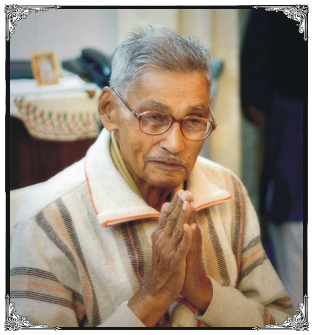

१. हम सब 'ठाकुर जी' के घर में रहते हैं। अतएव निम्नांकित बातों पर प्रतिक्षण सावधान रहें। याद रखें कि **सावधानी ही साधना है।** प्रत्येक मानव को सतत् साधक रहना है, क्योंकि **जो साधक नहीं है वह मानव ही नहीं है**, वह केवल प्राणी है।

२. परिवार में अथवा परिवार से बाहर के लोगों से बात करते समय किसी भी प्रकार की लोक-चर्चा को कोई स्थान न दें। **बात या तो केवल काम की हो, अथवा राम की हो**। परिचित व्यक्ति यदि कुछ कहना चाहे, तो पहले यह जान लें कि उसका भगवान में विश्वास है अथवा नहीं। भगवान के विश्वास का अर्थ है - भगवान की सर्वशक्तिमत्ता, सर्वान्तर्यामिता, सर्वज्ञता तथा सर्वसुहृदता एवं श्रीमद्भागवत्, रामचरितमानस और गीता पर अटूट विश्वास। इन सद्ग्रन्थों में महापुरुषों द्वारा लिखित उनकी व्याख्याएँ सम्मिलित हैं।

३. पारस्परिक बातचीत में किसी की निन्दा-प्रशंसा सर्वथा वर्जित रखें। दो व्यक्तियों की कोई तुलना न करे, न प्रकारान्तर से किसी की निन्दा अथवा प्रशंसा करें। आवश्यक हो तो किसी के किसी विशेष कार्य की प्रशंसा उसके अनुकरण के लिये कर लें।

४. किसी भी परिस्थिति में अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता देखना भगवान पर विश्वास में कमी का द्योतक है। प्रत्येक परिस्थिति भगवान् के विधान से तथा मनुष्य के पूर्व कर्म के फलरूप होती है। भगवान का विधान होने के कारण प्रत्येक परिस्थिति कल्याणकारी है। यह उसी प्रकार है जैसे चौराहे की हरी बत्ती और लाल बत्ती दोनों ही कल्याणकारी हैं। हरी बत्ती आगे बढ़ने में सहायक होती है, किन्तु लाल बत्ती मनुष्य को सुरक्षित रखकर आगे बढ़ने के योग्य बनाये रखती है।

५. मनुष्य का जीवन केवल उसके कर्म करने के अधिकार की पूर्ति करता है। **एक व्यक्ति का कर्त्तव्य दूसरे व्यक्ति का अधिकार नहीं है**। यदि किसी मनुष्य का कर्त्तव्य दूसरे को कोई सुविधा प्रदान करता है, तो वह धन्यवाद का पात्र है। इस सिद्धान्त को ध्यान में रखने से जीवन में किसी के प्रति शिकायत होने का अवसर ही नहीं मिलता।

६. जिसकी कोई आवश्यकता है, वह तो मानव ही नहीं है। मानव वह है जो स्वयं किसी अन्य की आवश्यकता हो।

७. जब भी किसी अन्य के कर्त्तव्य करने अथवा न करने पर दृष्टि जाये तो समझ लें कि आप अपने कर्त्तव्य की उपेक्षा कर रहे हैं।

८. किसी अन्य के अहंकार पर दृष्टि जाना इस बात का द्योतक है कि आप का अहंकार बढ़ा हुआ है।

९. "ठाकुर" जी के घर में रहने का यह उत्तरदायित्व है, कि घर में हर समय नाम-जप, सत्संग, स्वाध्याय, अग्निहोत्र, कीर्तन, कर्मयोग-साधना इत्यादि आध्यात्मिक कार्य होते रहें। किसी प्रकार की भी संसार-चर्चा आध्यात्मिक वातावरण को क्षुब्ध करती हैं और आसुरी शक्तियों का प्रवेश मार्ग खोल देती हैं।

**(संत-महात्माओं के प्रकाशित साहित्य से संकलित)**